Vol III Issue X July 2014

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary Research Journal*

# *Review Of Research Journal*

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net**

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 10 | July. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

# बकुलभूषण विरचित – बलिविजयम् में हास्यरस

***कलाबेन डी. पटेल***

शोधछात्रा , JJT Univ. Rajasthan.

***सारांश :***

मम्मट ने कविसृष्टि को ब्रह्मा की सृष्टि से अधिक स्वतंत्र और आह्लादमयी माना है।

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम् ।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।।[1]

काव्य के प्रयोजन में भी 'सद्यः परनिवृत्ति' भी आनंद का सूचन करता है। छांदोग्य उपनिषद् में परब्रह्म को 'रसो वै सः' से रसमय और आनंदमय माना है। आचार्य भरत ने रससूत्र देकर कहा है कि, विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात्द्रसनिष्पतिः।[2] अर्थात् रस की निष्पत्ति विभाव–अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग द्वारा स्थायीभाव भी रस का स्वरूप धारण करता है। स्थायीभाव हर मानवी में रहा है। परन्तु आलम्बन विभाव और उद्दीपनभाव के कारण स्थायीभाव प्रकट होते हैं। भावों द्वारा अनुभूति कराने से अनुभवों के कारण स्थायीभाव ही उद्दीप्त होता है। व्यभिचारी भावों या संचारीभावों से रसत्व दृढ़ीभूत होता है। अतः स्थायीभाव ही सहृदयों में अभिनवगुप्त के मतानुसार साधारणीकरण से रस की अनुभूति होती है। अतः प्रेक्षकों को सहृदय होना चाहिए।

## ***प्रास्ताविक :***

आचार्य भरत ने नाट्य में आठ ही रस माने हैं। नाट्ये•ष्टौ रसाः स्मृताः।[3] इनमें शृंगार, रौद्र, वीर और वीभत्स प्रकृतरस हैं।[4] परन्तु हास्य, करुण, अद्भुत और भयानक प्रकृतरसों से उत्पन्न होते हैं। हास्य की उत्पत्ति शृंगार रस से होती है।[5] आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में आठ रसों के स्थायी भावों में हास्य का हास स्थायी भाव बताया है। हास स्थायीभाव विभाव आदि से रसत्व पाता है।

विभाव द्वारा अभिनय का बोध होता है।[6] इससे अर्थ विभावित होता है। अभिनय के चार भेद हैं। आंगिक, वांचिक, आहार्य और सात्विक। आलम्बन और उद्दीपन विभाव के प्रमुख भेद हैं। शाकुन्तल में शकुन्तला और दुष्यन्त आलम्बन विभाव है और जलसिंचन करती नायिका का दर्शन उद्दीपन भाव है। इन अभिनयों जिससे अनुभावित होते हैं उसे अनुभाव कहते हैं। लौकिक कार्य अलौकिक अनुभाव बनते हैं।[7] शकुन्तला के दर्शन से प्रसन्नता की अभिव्यक्ति अनुभाव है। विविधरूप से वाणी, अंग और सत्व से रसों का वहन व्यभिचारी भाव करते हैं।[8] ऐसे भावों की संख्या 33 है।

आचार्यों ने रसविषयक चर्चा करते हुए प्रधानरूप में नव दश या इनसे अधिक रस माने हैं। उनमें भोजदेव एक है। सरस्वती कण्ठाभरण में शृंगाररस को ही प्रधानरस माना है।[9] रामचन्द्र–गुणचन्द्र ने 'सुखदुःखात्मको रसः' कहकर केवल आनंदमयता का स्वरूप नहीं माना परन्तु करुण आदिरसों से भी सुखानुभूति का समर्थन कई आचार्यों ने किया है। यहाँ केवल हास्य रस के संदर्भ में चर्चा की जायेगी।

आचार्य भरत ने हास्य का वर्णन श्वेत माना है। विश्वनाथ ने भी उसका समर्थन किया है।[10] प्रमथगण हास्य की देवता है।[11]

हास्य के उद्दीपन विभाव में विकृतवेश, लोलुपता, यदृच्छाभाषण, विकृतअंग दर्शन और दोष कथन आदि उद्दीपन विभाव हैं।[12]

**Title: "**cdqyHkw"k.k fojfpr & cfyfot;e~ esa gkL;jl **",**
**Source: Review of Research [2249-894X]** dykcsu Mh- iVsy **yr:2014 | vol:3 | iss:10**

हास्य के अनुभावों में होंठ, नाक, गाल आदि का स्पंदन नेत्र विस्कारण, मुखराग आदि अनुभाव हैं।13 तो आचार्य भरत ने आलस्य, निद्रा, स्वप्न, असूया आदि व्यभिचारी भाव है।[14]

हास्यरस का स्थायीभाव हास है।[15] विकृत अलंकार, विकृतवेश, विकृताचार आदि से सामाजिकों में हास्यरस उत्पन्न होता है।[16]

आचार्य भरत ने हास्य के आत्मस्थ और परस्थ17 दो भेद माने हैं। अंग वेश और वाक्य से उनके तीन भेद हैं।[18] विश्वनाथ ने उत्तम, मध्यम और अधम तीन भेद माने हैं।[19]

कविश्री बकुलभूषण भक्त कवि हैं। बलिविजय में भी भक्तिरस का प्राधान्य है। हरिभक्ति रसामृत सिंधु में रूपगोस्वामी ने भक्ति को एकरस माना है 'शुभानि प्रीणनं सर्व जगतामनुरक्तता।'[20] भगवद्रति उदित होने पर भक्ति की प्रधानरस बनता है। साधन, भाव और प्रेम से उनके तीन भेद होते हैं।[21] भक्तिरस के अवान्तर भेदों में हास्य भी भक्तिरस का एक भेद होता है। हास्यभक्ति में भगवान की लीला द्वारा हास्यरस निष्पन्न होता है। विभाव–अनुभाव और व्यभिचारीभाव शुद्ध हास्यरस के भेद होते हैं।

'बलिविजयम्' के नान्दी श्लोक में ही अनन्त कल्याणपूर्ण गुणाकार हरि का स्मरण भक्तिरस को सूचित करता है।22 (ब. वि. 1.1) बलि से पराजित इन्द्र के एक उक्ति में जीवन से मरण अधिक श्रेयस्कर इन्द्र मानता है। जीवितान्मरणं श्रेयो•धिमाजीवन्तमध। वामन को भी इन्द्र पर दया आ जाती है। उसकी मुलाकात में प्रथम अंक में ही चिन्ताकुल इन्द्र उन्माद से अमृत का भी उपहास करता है। 'अमृतं नाम किं तदमृतम् किम्'[23]। इन्द्र की उन्मत्तावस्था दयनीय होने पर भी अमृत के लिए लालाद्रित देवों के कारण स्मित का निमित्त बनता है। इन्द्र मानातिरेक के कारण वामन से मिलने से डरता है। यहां परिस्थितिजन्य हास्य है। वामन ने सामुद्रिक ज्ञान के आधार पर इन्द्र के अंग का अवलोकन किया है। हाथ के मणिबन्ध पर वज्र के निशान देखे और उसका अभिज्ञान प्रकट हो गया। सामुद्रिक लक्षण से व्यक्ति की स्थिति और भावि भूत भावि का दर्शन हो जाता है। इन्द्र को भी इससे आश्चर्य होता है। यहां स्मित हास्य प्रकट होता है।

'महदिदमाश्चर्य लक्षणशास्त्रेण तावत्सर्वं प्रत्यक्षमिवाभाति'।[24] हस्तरेखा देखने के बहाने वामन ने कहा कि जल्दी ही इन्द्र को राज्य प्राप्त होगा 'अचिरादेव भविष्यति'। निराशा में आशा का संचार होता है और जनसामान्य की मनोवृत्ति वामन ने प्रकट की है 'प्रायो जगति स्वलाभे त्वरातिशयो व्याकुलयत्येवं जनम्।'[25] यहाँ भी परिस्थितिजन्य स्मित हास्य है। यहां हास्य इन्द्रनिष्ठ होने से परस्थ हास्य है। वामन ने आधे राज्य देने की शर्त रखी तो इन्द्र ने कहा, 'हन्त, बटुरयम् समुत्कोचग्राहीव।'26 यहाँ परिस्थितिजन्य हास्य और पात्रनिष्ठ हास्य है और हसित प्रकार का हास्य है। जब वामन ने कहा कि सोचते क्या हो, 'सर्वनाशे समुत्पन्ने ह्यर्धं त्यजति पण्डितः'।[27] यह मुहावरा इन्द्र की स्थिति से वामन को अट्टहास्य करने के लिए प्रेरित है। प्रेक्षकगण भी इससे प्रभावित होते हैं। त्रैलोक्य राज्य की प्राप्ति होने पर आधा राज्य देने की शर्त मानव की मनोवृत्ति का निदर्शन है।

जब वामन ही सर्वेश्वर नारायण होने का ज्ञान होता है तब इन्द्र भी संभ्रम में पड़ जाता है क्योंकि बृहस्पति भी वामन को और वामन बृहस्पति को प्रणाम करते हैं। इन्द्र की लज्जा भी प्रेक्षकों को स्मित करने के लिए प्रेरता है।[28]

बलि के यज्ञमंडप में इन्द्र और बृहस्पति वेश परिवर्तन करके प्रवेश करते हैं और वंचना का उपाय[29] हास्य के साथ अद्भुत का सूचन परिस्थितिजन्य हास्य का कारण बनता है। वामन का मायाबल बृहस्पति और इन्द्र का रक्षा कवच है।

द्वितीय अंक में क्रूर दंड देने वाले बलि[30] का भी प्रजानन सत्कार करने के लिए तत्पर है। उनका कारण बलि प्रजारंजक है। इन्द्र इससे प्रभावित होता है 'हन्त। प्रकृतयो ड्प्यत्रानुरम्यः।'[31] इन्द्र आशा और निराशा के विकल्प में डूब जाता है परन्तु बलि की दानशीलता सभी को प्रभावित करती है।

वामन की सुन्दरता से अप्सरायें और सभासद प्रभावित होने से दानववृद्ध बलि को सावधान करते हैं। वामन शुक्राचार्य को एक नेत्र बना देते हैं। शुक्राचार्य की चेष्टा एक चक्षु होना और वामन की भक्ति का त्रिवेणीसंगम भी हास्यप्रेरक है। वामन के रूप में उपस्थित हुए विष्णु को देखकर बलि वक्रोक्ति से वामन को कहता है कि आप तो पुरुषोत्तम और लक्ष्मी का पति होने पर भी वामन क्या हुए और अर्थान्तरन्यास से कहा कि याचनाभाव ही व्यक्ति को वामन बनाता है 'जनमर्थिता वितनुते हि वामनम्।'[32] यहां वामन शब्द द्वारा श्लेष आंगिक और मानसिक वामनता का निर्देश समग्र सभा को गम्भीर के वातावरण में भी हास्य प्रेरता है।

बलि को शुक्राचार्य ने कहा कि यह स्वार्थी वामन आपका अद्यःपतन करेगा तो बलि ने व्यंग्य किया कि, 'कभी ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि भगवान पतितोद्धारक है।'

'न कदाप्येवं पतितोद्धारक हि भगवानयम्'[33]

हास्य बुद्धि चातुर्य व्यंग्य और कटाक्ष से निष्पन्न होता है। बलि का बुद्धिचातुर्य से हास्य निष्पन्न हुआ है। यहां शुक्राचार्य की ओर कटाक्ष करके कहा है कि, 'विष्णु तो स्वयं मुकुन्द है'[34] जो हमारे उद्धार के लिए आदर है। यहां परिस्थिति और पात्रनिष्ठ हास्य निमित्त बनता है। वामन का त्रिविक्रमरूप और एकाक्ष शुक्राचार्य का दर्शन भी आश्चर्य के साथ हास्यजनक है। जो वामन को अपमानित करने की इच्छा रखते थे वे उसे प्रभावित हो गये। यहाँ पात्रनिष्ठ और

स्वयंनिष्ठ हास्य बनता है। एकचक्षुत्य एकमति अथवा अनन्यभाव का सूचक है, जो बौद्धिकचातुर्य का उदाहरण है।[35]

अंतभाग में वामन द्वारा बलि को भक्तिप्रधान करुणा और बलि के भक्ति उन्मेष से इस नाट्यकृति में भक्ति हास्यरस अथवा हास्यभक्ति का निरुपण होती है।

***पाटदीप***

1.नियतिनियमकृतरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरससरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।। (का.प्र. 1/1)
2.ना.शा. पृष्ठ 272
3.ना. शा. 6/15
4.ना. शा. 6/40–41
5.ना. शा. 7–8
6.विभाव्यन्ते अनेन वागङ्गसत्वाभिनया इत्यतो विभावः (ना.शा. 7/94)
7.अनुभाव्यते अनेन वागङ्गसत्वकृतो•भिनयः (ना. शा. 7, पृष्ठ 347)
8.ना. शा. 7 पृष्ठ 355
9.शृगारप्रकाश पृष्ठ 431
10.सितो हास्य प्रकीर्तितः । (ना.शा. 6/44)
11.हास्य. प्रमथदैवतः (ना. शा. 6/44)
12.स च विकृतवेषालङ्कारधाष्टर्यलौल्यकुहकासत्प्रलाप व्यंग्यदर्शनदोषोदाहरण–
दिभिर्विभावैरुत्पद्यते। (ना.शा. 6, पृ. 138)
13.तस्य ओष्ठनासाकपोलस्पदनदृष्टिव्याकोशाकुञ्जनस्वदास्य रागपार्श्वग्रहमादिभिरनु–
भावैरभिनयः (ना. शा. 6, पृ. 138)
14.व्यभिचारिणश्च अस्य अवहित्थालस्यतद्वानिद्रास्वप्नप्रबोधासूयादयः ।
(ना.शा. 6, पृ. 138)
15.हास्यो नाम हासभावात्मकः ।
विपरीतलङ्कारैः विकृताचाराभिधानवेषैश्च।
विकृतैरथ विशैषैः हसतीति रसः स्मृतो हास्यः । (ना. शा. 6/49)
16.तत्रैव
17.द्विविधश्चायमात्मस्थः परस्थश्च (तत्रैव 6, पृ. 138)
18.विकृतचारजल्पाङ्गकल्पविरमापनोद्भवः (ना. द. 3/12)
19.ज्येष्ठानां स्मितहसितं मध्यानां विहसितोवहसितं च।
नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेव षड्भेदः ।। (सा. द. 3/217)
20.हरिभक्तिरसामृतासिन्धु । पृ. खंड 1/16
21.तत्रैव 2/1
22.ब. वि. 1.1
23.अमृतनाम किं तदमृतम् किय ? (अंक–1, पृष्ठ 59)
24.ब. वि. अंक 1, पृष्ठ 63
25.ब. वि. पृ. 66
26.ब. वि. पृ. 65
27.ब. वि. पृ. 65
28.ब. वि. 1/20
29.ब. वि. 1/25
30.ब. वि. 2/2
31.ब. वि. अंक–2, पृ. 89
32.ब. वि. 2/18
33.ब. वि. अंक पृष्ठ 91
34.ब. वि. 2/20
35.ब. वि. 2/24



dykcu Mh- iVsy
'kk/kNk=k ] JJT Univ. Rajasthan.

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net